महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, कोट्टयम की पी.एच.डी की उपाधि के लिए प्रस्तावित शोध विषय की अंतिम रूपरेखा

कुमार अंबुज का काव्यः संवेदना और शिल्प

कविता मानवीय संवेदनाओं की कलात्मक अभिव्यक्ति है। शुरु से ही कविता का सफर जीवन, मनुष्यता, श्रम और कर्म के रास्ते पर होता था। मनुष्यता का संरक्षण एवं संवर्द्धन कविता का मुख्य सरोकार है। जो कुछ मनुष्यता के विरोध में है कविता उसके विपक्ष में खडी होती है। कविता दिन-व-दिन प्रगति की राह पर है। अतः बदलाव की चेतना उसमें हमेशा विद्यमान है। सन् साठ के बाद 'समकालीन कविता' के नाम पर जो काव्य अभियान शुरु हुआ है, उसमें कवियों को अपने समय की जटिल सच्चाईयों को कविता के माध्यम से अभिव्यक्त करने की हिम्मत एवं जोखिम है। समकालीन हिन्दी कविता इस मायने में अपनी पूर्ववर्ती कविताओं से अलग होती है। अपने समय के यथार्थ, चाहे वे कितने भी बुरे हो उनका जीवंत चित्र समकालीन कविता में होता है। समकालीन कविता मानव जीवन की कठिनाईयों, संकीर्णताओं एवं जटिलताओं को अभिव्यक्त करके उसे संवेदनशील आदमी से तादात्म्य स्थापित कर लेती है। रचनात्मक ऊर्जा, मार्मिक संवेदना, इतिहास बोध और विषय विविधता जैसी विभिन्न दृष्टियों से देखने पर समकालीन हिन्दी कविता अपनी अलग अस्मिता कायम रखती है। समकालीन कविता मनुष्य को उसके संपूर्ण परिवेश के साथ पहचानकर उसका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करती है।

समकालीन समाज में दिन ब दिन बढती क्रूरता, हिंसा, उद्दण्डता और आतंक आदि के कारण मानव जीवन अमानवीय बन गया है। समकालीन कविता

अपने समय को क्रूर, स्वार्थ एवं बाजारू बना देनेवाली ताकतों के खिलाफ प्रतिरोध का स्वर उठाती है। समाज से नष्ट होनेवाली मनुष्यता और सामाजिकता को बचाने के पक्ष में खडे होकर समकालीन हिन्दी कवि अपनी समकालीनता का दायित्व निभाने की यथासंभव कोशिश करते हैं। समकालीन हिन्दी कविता को नई दिशा और दृष्टि प्रदान करनेवाले कवियों में कुमार अंबुज का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। उनका जन्म मध्यप्रदेश के गुना जिले के ग्राम मंगवार में १३ अप्रैल १९५७ को हुआ था। १९७७ से वे स्टेट बैंक ऑफ इंदौर में नौकरी कर रहे थे। वर्ष २०११ में उन्होंने बैंक की नौकरी छोड दी और अब वे रचना संसार में ज्यादा सक्रिय हो रहे हैं। अब तक उनके पाँच काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं— किवाड (1992), क्रूरता (1996), अनंतिम (1998), अतिक्रमण (2002), अमीरी रेखा (2011)। इच्छाएँ (2008) उनका कहानी संग्रह है। श्रम के घंटे और मनुष्य का अवकाश, धर्म के विकल्प की परिकल्पना और सबसे अच्छा और सबसे ताकतवर आदि उनके गद्य लेख हैं। किवाड कविता के लिए उन्हें १९८८ का भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार और इसी शीर्षक से प्रकाशित कविता-संग्रह को राज्य साहित्य अकादमी तथा मध्यप्रदेश साहित्य परिषद् का माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार (१९९४) प्राप्त हुआ है। क्रूरता संग्रह के लिए उन्हें वागीश्वरी पुरस्कार और गिरिजा कुमार पुरस्कार (१९९८) प्राप्त हुए हैं। अनंतिम संग्रह के लिए वर्ष १९९८ का केदार सम्मान और १९९९ का श्रीकांत वर्मा स्मृति सम्मन भी प्राप्त हुए हैं। शीर्ष साहित्यिक संस्थाओं में युवा कविता की ओर से उनका काव्य पाठ हुआ है। विभिन्न प्रतिनिधि कविता संचयनों एवं पाठ्यप्रक में उनकी कविताएँ शामिल की गई हैं। उनकी अनेक कविताओं का अनुवाद जर्मनी, रूसी, अंग्रेजी, नेपाली तथा अन्य भारतीय भाषाओं में हुआ है।

कुमार अंबुज वर्तमान समय की विभिन्न दर्दभरी आवाजों को पहचानने वाले कवि के रूप में विख्यात है। वर्तमान समाज की संवेदनहीनता और संबन्धहीनता

के खिलाफ उनकी कविताएँ सवाल उठाती हैं। अपने समय के यथार्थ से जूझनेवाले मनुष्य की नियति और संघर्षशीलता की बारीक पकड कुमार अंबुज की कविताओं की विशिष्टता बनती है। श्रम का महत्व और शोषण प्रक्रिया के बारे में वे अच्छी तरह वाकिफ़ हैं। उनकी कविताओं का मुख्य स्वर अपने समय के अन्याय का विरोध करना और अमानवीय ताकतों के विरुद्ध लडना है। भविष्य को असुन्दर इतिहास से बचाने की तीव्र कामना, हर जगह इंसान का दखल देखने की इच्छा और अतुकांत जीवन की तुकें ढूँढने का मोह आदि कुमार अंबुज की कवि दृष्टि की विशिष्ट पहचान है। ठेठ स्थानीयता के रंगों की पहचान, शहर के औद्योगीकरण का खास अनुभव आदि के कारण कुमार अंबुज गाँव और शहर के मिले-जुले कवि हैं। मानव जीवन के प्रति अप्रतिहत संलग्नता होने के कारण कवि अंबुज को निराला, मुक्तिबोध और धूमिल की काव्य परंपरा को आगे ले जानेवाले कवि होने का श्रेय प्राप्त हुआ है। अंबुज की कविता मनुष्यता के संरक्षण और संवर्धन का नया दस्तावेज बन जाती है। उनकी कविताओं पर समय समय पर कई आलोचनाएँ और टिप्पणियाँ निकल चुकी हैं। लेकिन उनकी कविताओं के संवेदना पक्ष और शिल्प पक्ष पर कोई समग्र अध्ययन अभी तक नहीं हुआ है। कुमार अंबुज जैसे संवेदनशील कवि की कविताओं के अध्ययन के बिना समकालीन हिन्दी कविता का अध्ययन अधूरा रह जाएगा। इसलिए अंबुज की कविताओं को विशेष रूप से उल्लिखित करना अपेक्षित ही नहीं अनिवार्य भी है। इस आवश्यकता की पूर्ति में हमारा यह अध्ययन—''कुमार अंबुज का काव्य संवेदना और शिल्प'' एक विनम्र प्रयास होगा, यही उम्मीद है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध ''कुमार अंबुज का काव्यः संवेदना और शिल्प'' पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है। समकालीन हिन्दी कविता-एक विश्लेषण नामक पहले अध्याय में 'समकालीन' शब्द पर विचार करते हुए समकालीन कविता की विभिन्न परिभाषाओं पर प्रकाश डाला गया है। समकालीनता की

समयपरक दृष्टि और संवेदनात्मक दृष्टि की ओर यहाँ संकेत किया गया है। प्रस्तुत अध्याय में समकालीन कविता के विभिन्न आन्दोलनों पर प्रकाश डालते हुए इसकी मुख्य प्रवृत्तियों और प्रतिनिधि कवियों का उल्लेख भी किया गया है।

'कुमार अंबुज का रचना संसार' शीर्षक दूसरे अध्याय में कुमार अंबुज के वैयक्तिक जीवन के विभिन्न आयामों का विस्तृत वर्णन किया गया है। उनकी शिक्षा, परिवार, काव्य रचना का प्रेरणा स्रोत, उनके प्रिय साहित्यकार एवं रचनाएँ, मार्क्सवादी विचार धारा के प्रति झुकाव, समाजवादी व्यक्तित्व, मानववादी दृष्टि आदि विषयों पर यहाँ चर्चा की गई है। कुमार अंबुज के कवि कर्म को पूर्णतः समझने हेतु आपकी रचनाप्रक्रिया तथा शिल्प संबन्धी विचारों का अनुशीलन भी इस अध्याय में किया गया है। प्रस्तुत अध्याय में उनके २००८ तक प्रकाशित चार काव्य संकलनों की कविताओं का विस्तृत अध्ययन हुआ है। उनके प्रथम काव्य संकलन 'किवाड' में स्मृतियों की अभिव्यक्ति अधिक हुई है। इसमें घर की चिंता, परंपरा के जीवन्त तत्व, स्मृतियों का दर्द, माता-पिता की मनःस्थिति, आँचलिक सहजता, उपेक्षित या निर्जीव चीज़ों के प्रति संवेदना, प्राकृतिक विनाश, स्त्री संवेदना, आदमी की निराशाजनक स्थितियाँ, जनतंत्र का छद्म, सामाजिक असुरक्षा, प्रेम, सामन्ती व्यवस्था आदि का चित्रण हुआ है। कुमार अंबुज का दूसरा काव्य संग्रह 'क्रूरता' में समसामयिक क्रूरता की स्थितियाँ पूरी भयानकता के साथ मौजूद हैं। प्रस्तुत संकलन में कवि अंबुज ने दुनिया भर की अमानवीय संस्कृति को देखकर भविष्य का अनुमान किया है कि क्रूरता युग की पहचान तक हो जाएगी। उनके तीसरे काव्य संकलन 'अनंतिम' शिल्प एवं संवेदना की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण संकलन है। प्रस्तुत संकलन में कवि ने वर्तमान राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक क्षेत्र में बहुत बदतर स्थिति में रहनेवाले मनुष्य के चित्रण द्वारा समकालीन समाज की टिप्पणी उभारने की कोशिश की है। चौथे संकलन 'अतिक्रमण' की कविताओं में कवि ने अपने समय

और समाज को एक नए दृष्टिकोण से देखा है। इसमें बाजारवाद के घातक प्रभाव, चीज़ों की सामुदायिकता, मानवीय स्वतन्त्रता का हनन, बाज़ार के तंत्र, दूकानदारी का चलन आदि का खुला चित्रण किया गया है।

'कुमार अंबुज की कविताओं के संवेदना पक्ष' शीर्षक तृतीय अध्याय में कुमार अंबुज की संवेदनाओं के संवेदनात्मक एवं वैचारिक पक्षों की सही पड़ताल की गई है। इस अध्याय में 'संवेदना' शब्द की व्युत्पत्ति, शब्दकोशीय अर्थ और काव्य संवेदना के विभिन्न आयामों के बारे में विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाएँ प्रस्तुत की गई हैं। आगे इस अध्याय में कुमार अंबुज की कविता-संवेदना के विविध आयाम पर विचार किया गया है। इतिहास व परंपरा से अलगाव, पारिवारिक विघटन, गाँव और शहर के जीवन का अंतर, महानगरीय जीवन की विसंगतियाँ, वैश्विक राजनीति, पूँजीवादी शोषण, बाज़ारी व्यवस्था में आम आदमी की मुसीबतें, श्रम का महत्व, स्थानीयता, मानव व्यक्तित्व का हनन, संस्कृति की अमानवीयता, पाखंड राजनीति, सांप्रदायिकता, निम्न एवं मध्यवर्गीय जीवन की असुरक्षा, स्त्री संवेदना, प्राकृतिक विनाश आदि उनकी काव्य संवेदना के तमाम पक्षों की सही जाँच पडताल यहाँ की गई है। अध्याय के निष्कर्ष के रूप में समकालीन कविता के संदर्भ में कुमार अंबुज की काव्य संवेदनाओं की तमाम विशेषताओं को भी उजागर किया गया है।

चौथे अध्याय 'कुमार अंबुज की कविताओं का शिल्प विधान' है, जिसमें कविता की भाषा एवं शिल्प पक्ष पर समय समय पर आए बदलाव का संक्षिप्त चित्रण प्रस्तुत किया गया है। शिल्प और काव्य भाषा के बारे में कुमार अंबुज का अपना विचार यहाँ दिया गया है। सपाटबयानी की काव्य भाषा में लिखने का कवि सामर्थ्य, व्यंग्यात्मक शैली, चित्रात्मक शैली, उनकी कविताओं के शब्द संपदा, अर्थ भंगिमा आदि पर भी यहाँ अनुशीलन किया गया है। कवि अंबुज के द्वारा

प्रयुक्त नवीन एवं ताजे बिम्बों एवं प्रतीकों का उल्लेख भी यहाँ हुआ है जिनके द्वारा उनका काव्य शिल्प अनूठा बन गया है।

पाँचवाँ अध्याय शोध प्रबन्ध का उपसंहार है, जिसमें कुमार अंबुज की काव्यगत उपलब्धियों पर दृष्टि डालते हुए समकालीन कविता को उनकी देन के संबन्ध में चर्चा की गई है। प्रस्तुत अध्याय में कुमार अंबुज की कविता की रचनाधर्मिता के महत्व को उजागर करने की कोशिश की गई है। इसके पश्चात् कवि कुमार अंबुज से लिए गए साक्षात्कार को भी संलग्न किया गया है। कुमार अंबुज की कविताओं पर विचार करते समय जिन सवालों का मुझे सामना करना पडा उन सवालों को लेकर कवि से की गई बातचीत उन पर और भी विस्तार से अध्ययन करनेवालों के लिए उपयोगी साबित होगी। कुमार अंबुज के चारों काव्य संकलनों की कविताओं में ऐसे मौलिक चिन्तन, विचार, मत, प्रतिपत्तियाँ और संकेत हैं कि उनमें से कवि की जनपक्षधरता तथा उनके काव्य प्रतिमान के विविध आयाम उभर आते हैं। कुमार अंबुज के लिए कविता कठिन समय की कविता है। कुमार अंबुज की कविता अपने समय एवं समाज की क्रूरता और अन्याय के खिलाफ लडती है। उन्होंने अपनी कविताओं के जरिए जीवन की सहजता और सुन्दरता को नष्ट करनेवाली मनुष्य विरोधी ताकतों के खिलाफ लडने का साहस और हौसला दिखाया है। अतः उनकी कविता मानव मुक्ति के लिए किए जानेवाले संघर्षों में शामिल है। अंत में इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अंबुज के लिए संवेदना कविता का ही नहीं जीवन का भी महत्वपूर्ण पक्ष है। मानवता के पक्ष में खडे होकर पाठक की संवेदना का विस्तार करना ही उनके लिए कविता की पहली शर्त है। कुमार अंबुज ने अपनी कविताओं के द्वारा सुन्दर-असुन्दर की व्याख्या देते हुए पाठकों में मनुष्य और मनुष्यता के पक्ष में खडे होने की प्रेरणा जगाई है। विकल्प की सुविधा और असहमति की स्वतन्त्रता लगातार कम हो जानेवाले इस समय में जीवन विरोधी ताकतों के विरुद्ध लड़ते और साहित्य एवं

जीवन को उजाड़ से बचाने के लिए सतत जागरूक रहनेवाले कवि कुमार अंबुज ने समकालीन हिन्दी कविता में अपनी अलग पहचान बनाई है। अंबुज ने ऐसी काव्य भाषा ईजाद की है जो सकारात्मक व पारदर्शी है। लेकिन उसमें कोई चमत्कार प्रियता नहीं है। उन्होंने ऐसी भाषा का प्रयोग किया है जिसके अर्थ को समझने के लिए शब्दकोशों की ज़रूरत नहीं पड़ती, फिर भी उसमें अर्थ की गहराई मौजूद है। इस पारदर्शी भाषा में उन्होंने अपने समकालीन समाज के जरूरी हिस्से को उनकी सारी संपूर्णताओं के साथ पेश किया है। कुमार अंबुज की कविताओं को सही ढंग से समझने और समकालीन परिस्थितियों में उनकी उपादेयता को परखने की दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन "कुमार अंबुज का काव्यः संवेदना और शिल्प" सार्थक सिद्ध होगा, यही उम्मीद है। कुमार अंबुज जैसे संवेदनशील कवि की रचनाधर्मिता को परखने के लिए यह अध्ययन पृष्ठभूमि है, जो शोध की अनन्त संभावनाएँ जगाने में भी सहायक होगा।

Signature of Supervising Teacher:

Name & Designation of Supervising Teacher : Dr. BABU JOSEPH
Associate Professor & HOD
Dept. of Hindi
K.E. College, Mannanam
Kottayam

Place:

Date :